अभिराजराजेन्द्र मिश्र संस्कृतगीत–परम्परा के यशस्वी रचनाकार

डॉ. सोनिका राव

अभिराजराजेन्द्र मिश्र ने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'अभिराजयशोभूषणम्' में गीत प्रकरण को स्पष्ट करते हुए कहा है कि प्राचीन आचार्यों के द्वारा यह कहा गया है कि 'गीतियों' की ही साम संज्ञा है, उसी से गीतितत्त्व का महत्त्व शिखरारूढ़ सिद्ध होता है।

मिश्र संस्कृत गीतों को हिन्दी एवं समकालीन लोकभाषाओं के समानान्तर उन्हीं छन्दों, लोक धुनों एवं प्रतिष्ठित गीत प्रकारों से ढालते हुए उन्हेंसंस्कृत नाम दिया है। इन्होंने लोकभाषायी गीत चैता को 'चैत्रकम' कँरहवा को 'स्कन्धहारीयम्' सोहर को 'सूतगृहम्' तथा कजरी को 'कं प्रियाऽऽगमनसुखंरंजयति या सा कजरी' इस रूप से शुद्ध संस्कृत शब्द सिद्ध करते हुए इन्हें संस्कृत में उपनिबद्ध कर संस्कृत गीत होने का पवित्र गौरव प्रदान किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिश्र गीत परम्परा के यशस्वी रचनाकार हैं, जिनका गीतोपवन लालित्य, वैविध्य एवं आनन्त्य के सुरभित तथा सुगन्धित पुष्पों से सर्वथा मण्डित है।